

**कक्षा - आचार्यः**  
**विषयः - हिन्दू अध्ययन**  
**मन्दिर स्थापत्य एवं प्रबन्धन**

**सत्रार्द्धम् : प्रथमम्**

**पत्रम् : प्रथमम्**

गूढाङ्कः	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः –	पूर्णाङ्कः	अवधि:	श्रेयोङ्कः
1008.1	प्रथमम्		पाठ्यांशः -	१००	१० होरा:	४
		१	1.1. वास्तु की परिभाषा, वास्तुपुरुष का स्वरूप एवं परिकल्पना 1.2. वास्तु की मूल अवधारणा (प्राकृतिक शक्तियां, पञ्चमहाभूत एवं दिशा) 1.3. वास्तु के प्रकार - सर्वतोभद्र, नन्द्यावर्त, वर्धमान, स्वस्तिक, रुचक 1.4. मन्दिर निर्माण स्थल, 1.5. भूमिलक्षण, 1.6. भूमिचयन एवं भू-शोधन 1.7. भूमिलवत्वविचार	२०	२२ होरा:	१
		२	2.1. शिलान्यास एवं स्तम्भस्थापना 2.2. वास्तुपदविन्यास (चतुषष्टि, एकाशीति, शतपद) 2.3. कालशुद्धि एवं मुहूर्त (शिलान्यास, मन्दिरारम्भ, देवप्रतिष्ठा) 2.4. निर्माण सामग्री - शिलाकाष्ठादिप्रयोग	२०	२३ होरा:	१
		३	3.1. देवप्रासाद की अवधारणा एवं विकास 3.2. प्रासाद के भेद (मेरु आदि प्रासाद के भेद) 3.3. मन्दिर स्थापत्य की शैलियां (द्राविड, नागर, वेसर) 3.4. मन्दिर के अंग (अधिष्ठान, जगती, मण्डप, गर्भगृह, मण्डोवर, स्तम्भ, शिखर, कलश, ध्वज) 3.5. गोपुर एवं द्वारसज्जा	२०	२२ होरा:	१
		४	4.1. विग्रहविमर्श- पर्यायवाची, शिलाकाष्ठादि विग्रहनिर्माणसामग्री एवं विग्रहमानविमर्श, 4.2. मूर्तिस्वरूपविमर्श - दशावतार, महाविद्या 4.3. पञ्चदेव आयतन - शिवायतन, सूर्यायतन, देवी आयतन, गोशा आयतन, विष्णु आयतन, 4.4. गृह एवं मन्दिर में मूर्तिप्रमाण, 4.5. मूर्तिस्थापनप्रक्रिया 4.6. मन्दिर में पूजनविधान - जागरण, भोग, शयन, पञ्चोपचार, षोडशोपचार	२०	२३ होरा:	१
			आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १. आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तकार्यम् / प्रायोगिकम् २. शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्चा ३. शिक्षणस्रोतसामग्र्या: चयनं प्रबन्धनञ्च ४. उपस्थितिः  ७५% = ०१ अङ्कः ७६%-८०% = ०२ अङ्कौ ८१%-८५% = ०३ अङ्कः ८६%-९०% = ०४ अङ्कः ९१% तः अधिकम् = ०५ अङ्कः।	अङ्कः: ०५ अङ्कः: ०५ अङ्कः: ०५ अङ्कः: ०५  २०	-	-

सहायकपुस्तकानि :-

- वृहदवास्तुमाला
- समराङ्गणसूत्रधार
- प्रासादमण्डन
- देवतामूर्ति प्रकरण
- रूपमण्डन
- बृहत्संहिता – वास्तुविद्याध्याय

**कक्षा - आचार्यः**  
**विषयः - ज्योतिषम्**  
**संस्कृत परिचय**

**सत्रार्द्धम् : प्रथमम्**

**पत्रम् : द्वितीयम्**

गूढाङ्कः	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः -	पूर्णाङ्काः	अवधिः	श्रेयोऽङ्कः
1008.2	द्वितीयम्		<b>पाठ्यांशः - संस्कृत परिचय</b>	१००	१० होरा:	५
		१	वर्णमाला परिचय (चतुर्दश महेश्वर सूत्राणि), वर्णविन्यास, वर्णसंयोग, वर्णविच्छेद, शब्द रूप-पुलिलंग- देव, राम, कवि, हरि, गुरु, पितृ, स्त्रीलिङ्गम्- मति, धेनू, मातृ, लता, नदी, नर्पुसकलिङ्गम्-फल, वारि, वस्तु, सर्वनाम-अस्मद, युष्मद्, तद्, एतद्, भवत्, किम्, इदम्, सर्व (त्रिषु लिङ्गेषु) धातुरूपाणि-परस्मैपदिनः-पठ, लिख, चल, गम, नम, खाद, वद्, हस्, गै, ज्ञा, नी, दृश, पा (पिब), स्मृ, क्रुध, पृच्छ, दा, त्यज्, धाव, पच, रक्ष, भी, क्षिप्, मिल, चिन्त, रच्। आत्मनेपदः-लभ्, सह्, सेव्, याच्।	१६	१८ होरा:	१
		२	सन्धि-स्वरसन्धिः-यण्, अयादि, गुण, वृद्धि, दीर्घ, पूर्वस्वप, परस्वप, प्रकृतिभाव। व्यञ्जनसन्धि-परस्वर्णः, अनुनासिकः, श्वृत्वम्, षुत्वम्, जश्वत्वम्, चर्त्वम्। विसर्गसन्धिः-विसर्गलोपः, विसर्गस्थाने ओ, र, स, श, ष, अनुस्वारः र लोप, त स्थाने ल् अनुनासिक। समासः- अव्ययीभावः, तत्पुरुषः, कर्मधारयः, द्विगुः, बहुव्रीहिः, द्वन्द्वः।	१६	१८ होरा:	१
		३	कारक-कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान (सम्बन्ध), अधिकरण, सम्बोधन। उपपदविभक्तिः-अधि, अनु, उप, उभयतः, परितः, निकषा, प्रति, धिक्, विना...योगे द्वितीया। अलम्, विना, हीनम्, सह, साकम, साधम्, समम्....योगे तृतीया। नमः, रुच, दा, स्पृहा, अलम्(सामर्थ्यर्थी) ..., चतुर्थी। विना, बहिः, परम्, पूर्वम्....योगे पञ्चमी। अग्रतः, पुरतः, पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणतः, उत्तरतः...योगे षष्ठी। स्निह, विश्वस...योगे सप्तमी। वाच्य-कर्तुवाच्यम्, कर्मवाच्यम्, भाववाच्यम्। प्रत्यय-कृतप्रत्ययः-र्त, कृतवतु कत्वा, तुमुन्, शतृ, शानच्, क्तिन, ल्युट्, तव्यत्, अनीयर, एवुल् तद्वितप्रत्ययः-मतुप्, इन्, ठक्,(इक्), त्व्, तल्। स्त्रीप्रत्यय-डीप्, टाप्। अव्यय-अत्र, तत्र, यत्र, सर्वत्र, कुत्र, एकत्र, यतः, ततः, यदा, तदा, सदा, सर्वदा, कदा, अद्य, श्वः, ह्यः, परश्वः, परह्या, च, अपि, एव, आम, किम्, धन्यवादः, आवश्यकम्, उपरतः, पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणतः, अभितः, परितः, पर्यासम्, अलम्, इति। उपसर्ग-आ, उत्, अनु, वि, प्र, परि, अव, उप, सम्, अप, संख्या- सङ्ख्यावाचि-शब्दस्पृष्टिः एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः: (त्रिषु लिङ्गेषु) संख्या-5-100	१६	१८ होरा:	१
		४	संस्कृत शब्दावली का पाश्चात्य अवधारणाओं से विशेषाभास (ईश्वर/God, आत्मा/Soul, समुदाय धर्म/Religion, पति-पत्नी husband-wife),	१६	१८ होरा:	१
		५	संस्कृत पाठ्यांशों के माध्यम से संस्कृत भाषा पढ़ने तथा लिखने का अभ्यास, पञ्चतन्त्रम्, श्रीमद्भगवद्गीता द्वादशोद्ध्यायः भक्तियोगः।	१६	१८ होरा:	१
			आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १. आन्तरिकपरीक्षणम्/ प्रदत्तकार्यम् / प्रायौगिकम् २. शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या ३. शिक्षणस्रोतस्सामग्र्याः चयनं प्रबन्धनञ्च ४. उपस्थितिः  ७५% = ०१ अङ्कः ७६%-८०% = ०२ अङ्कौ ८१%-८५% = ०३ अङ्काः ८६%-९०% = ०४ अङ्काः ९१% तः अधिकम् = ०५ अङ्काः।	२०	-	-

## **सहायक पुस्तकानि –**

- |   |  |
|---|--|
| 1. रचनानुवाद कौमुदी                             | - कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, भूगर्भतल, चौक, वाराणसी 221001।                            |
| 2. अनुवादचन्द्रिका                              | - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, चौक, वाराणसी 221001।   |
| 3. बृहद अनुवादचन्द्रिका                         | - चक्रधर नोटियाल, मोतीलाल बनासीदास।  |
| 4. अनुवाद कला                                   | - चार्ल्डेव शास्त्री, मोतीलाल बनासीदास।  |
| 5. संस्कृत स्वयं शिक्षक                         | - श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली 110006।  |
| 6. संस्कृत स्वाध्याय                            | - केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), 56-57, इन्स्टीट्यूशन एरिया, जनकपूरी, नई दिल्ली, 2001। |
| 7. शुद्धिकौमुदी                                 | - जनार्दन हेगडे, प्रकाशन संस्कृतभारती बैंगलूरु।  |
| 8. पञ्चतन्त्रम्                                 |  |
| 9. श्रीमद्भागवतीता                              | - शांकरभाष्य (हिन्दी अनुवाद सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2065।   |
| 10. दार्शनिक सम्प्रत्यय कोश                     | - शशिप्रभाकुमार, संतोष शुक्ल   |
| 11. संस्कृत वाक्यों में वाच्यपरिवर्तन सिद्धान्त |  |
| 12. समाजभाषा विज्ञान                            | - शिवाजी विद्यापीठ कोलापुर   |

**कक्षा - आचार्यः**  
**विषयः - हिन्दू अध्ययन**  
**प्रमाण सिद्धान्त**

**सत्रार्द्धम् : प्रथमम्**

**पत्रम् : तृतीयम्**

गूढाङ्कः	प्रश्नपत्र- क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः -	पूर्णाङ्कः	अवधि:	श्रेयोऽङ्कः
			<b>पाठ्यांशः - प्रमाण सिद्धान्त</b>	१००	१० होरा:	५
1008.3	तृतीयम्	१	प्रमाण सिद्धान्त की उत्पत्ति एवं विकास, प्रमाण की परिभाषा- (प्राच्य और पाश्चात्य मत), शास्त्र विश्लेषण का भारतीय प्रारूप-ज्ञाता-ज्ञेय-ज्ञान।	१६	१८ होरा:	१
		२	विभिन्न प्रमाणों की परिभाषा एवं प्रकृति, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान।	१६	१८ होरा:	१
		३	शब्द प्रमाण, अर्थापति और अनुपलब्धि।	१६	१८ होरा:	१
		४	प्रकृति विज्ञान के साथ विभिन्न प्रमाणों का अन्तःसम्बन्ध, प्रमाण सिद्धान्त का अनुप्रयोग-आयुर्वेद और तत्त्वमीमांसा।	१६	१८ होरा:	१
		५	सम्पूरकता और प्रमाण तथा विमर्श की आवश्यकता, समकालीन सन्दर्भ में अनुप्रयोग।	१६	१८ होरा:	१
				आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १. आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तकार्यम् / प्रायोगिकम् २. शास्त्रसञ्चालनगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्चा ३. शिक्षणस्रोतस्सामग्र्याः चयनं प्रबन्धनञ्च ४. उपस्थितिः  $75\% = 01$ अङ्कः $76\%-80\% = 02$ अङ्कौ $81\%-85\% = 03$ अङ्काः $86\%-90\% = 04$ अङ्काः $91\%$ तः अधिकम् = ०५ अङ्काः।	अङ्काः ०५ अङ्काः ०५ अङ्काः ०५ अङ्काः ०५  २०	-

**सहायक पुस्तकानि -**

- |   |  |
|---|--|
| 1. न्याय भाष्य                              | -प्रसन्नपदा टीका सहित, द्वारिका दास शास्त्री |
| 2. न्याय दर्शन में अनुमान                   | -सच्चिदानन्द मिश्र भारतीय विद्या प्रकाशन     |
| 3. सर्वदर्शन संग्रह-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'     | -चौखम्बा विद्या भवन प्रकाशन                  |
| 4. A Modern introduction to Indian Logic    | -National Publication House.                 |
| 5. तर्क भाषा-राकेश शास्त्री                 | -चौखम्बा औरियन्टलिया                         |
| 6. तर्क भाषा-डॉ गजानन्द शास्त्री मुसलगाँवकर | -चौखम्बा भारती प्रकाशन                       |
| 7. Methods of Knowledge                     | -Swami Sal Prakashanad                       |

## कक्षा - आचार्यः

### विषयः - हिन्दू अध्ययन हिन्दू सिद्धान्त और स्त्री विमर्श

**सत्रार्द्धम् : प्रथमम्**

**पत्रम् : चतुर्थम्**

गूढाङ्कः	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः -	पूर्णाङ्कः	अवधि:	श्रेयोङ्कः
1008.4	चतुर्थम्		पाठ्यांशः - तत्त्व विमर्श (हिन्दू सिद्धान्त-तत्त्व स्त्रीविमर्श एवं स्त्रीकार्यत्व)	१००	१० होरा:	५
		१	हिन्दू शब्द का अर्थ, अभिप्राय, भारतीय ज्ञान परम्परा का विश्लेषण, अष्टा�दश विद्या, आत्मा का स्वरूप, सभी परम्पराओं में आत्म तत्त्व की समानता।	१६	१८ होरा:	१
		२	हिन्दू सिद्धान्त की सार्वभौम समानता, शक्ति और प्रकृति सिद्धान्त तथा स्त्री और देवी के साथ सम्बन्ध, बौद्ध जैन एवं सिख परम्पराओं में स्त्री सिद्धान्तों में समानता।	१६	१८ होरा:	१
		३	वैदिक परम्परा के आधार पर विपरीत विचारों की स्त्रीकार्यता और एकता का सिद्धान्त (जैन बौद्ध सिख न्याय और वैशेषिक परम्पराओं में अन्तः सम्बन्ध का सिद्धान्त)	१६	१८ होरा:	१
		४	शब्दावली में एकत्व- एक सत्ता के अनेक नाम, तर्क की स्त्रीकार्यता, सिख मत, अनन्त ज्ञान और विनम्रता का उत्प	१६	१८ होरा:	१
		५	वर्ण व्यवस्था (पुरुष सूक्त तथा वृहदारण्यक उपनिषद्), वर्ण जाति एवं कास्ट भिन्न विचारों से सम्बद्ध	१६	१८ होरा:	१
			आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १. आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तकार्यम् / प्रायोगिकम् २. शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या ३. शिक्षणस्त्रोतस्सामग्र्या: चयनं प्रबन्धनञ्च ४. उपस्थितिः  ७५% = ०१ अड्कः ७६%-८०% = ०२ अड्कौ ८१%-८५% = ०३ अड्कः ८६%-९०% = ०४ अड्कः ९१% तः अधिकम् = ०५ अड्कः।	अड्कः: ०५ अड्कः: ०५ अड्कः: ०५ अड्कः: ०५ २०	-	-

**सहायक पुस्तकानि-**

1. न्याय भाष्य
2. तर्क भाषा
3. तर्क भाषा
4. भारतीय दर्शन
5. Navya navya System of logic
6. हिन्दूत्व
7. सौन्दर्य लहरी
8. वृहदारण्यकोपनिषद्, सानुवाद शाइकरभाष्य सहित
9. भारतीय विद्यासार
10. संस्कृत वाङ्मय में विज्ञान का इतिहास
11. भारत की सन्त परम्परा और सामाजिक समरसता

- द्वारिका दास शास्त्री-सुची प्रकाशन
- राकेश शास्त्री-चौखम्बा औरियन्टालिया
- डॉ गजानन्द शास्त्री मुसलगाँवकर-चौखम्बा भारती प्रकाशन
- श्रीकान्त पाण्डे
- Motilal Banarasidass
- J. Nand Kumar
- डॉ सूर्यनारायण द्विवेदी, शारदा संस्कृत संस्थान
- गीताप्रेस गोरखपुर
- शशिबाला-भारतीय विद्या भवन
- कमलाकान्त मिश्र
- डॉ. कृष्ण गोपाल

**कक्षा - आचार्यः**  
**विषयः - हिन्दू अध्ययन**  
**वाद परम्परा**

**सत्रार्द्धम् : प्रथमम्**

**पत्रम् : पञ्चमम्**

गूढाङ्कः	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः -	पूर्णाङ्कः	अवधि:	श्रेयोङ्कः
1008.5	पञ्चमम्		पाठ्यांशः - वाद-परम्परा, संघटन विकास तथा ज्ञान का पोषण	१००	१० होरा:	५
		१	वाद परम्परा-शास्त्रार्थ की विधि, वाद-जल्प-वितण्डा	१६	१८ होरा:	१
		२	ज्ञान परम्परा का संगठन- ज्ञान का संग्रह (सूत्र ग्रन्थ, भाष्य, वार्तिक, वृत्ति, टीका तथा टिप्पणी)	१६	१८ होरा:	१
		३	ज्ञान के तात्पर्य विश्लेषण के नियम, अर्थ, निर्धारण की प्रविधियाँ।	१६	१८ होरा:	१
		४	तन्त्र युक्ति (चरक, अष्टांग हृदय, सुश्रुत, अर्थशास्त्र, प्रकृति विज्ञान, तकनीकि तथा औषधि, न्यायिक प्रक्रिया)	१६	१८ होरा:	१
		५	वेद का अर्थ, वेदांग, पाठ पद्धति	१६	१८ होरा:	१
			आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १. आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तकार्यम् / प्रायौगिकम् २. शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्चा ३. शिक्षणस्रोतस्सामग्र्या: चयनं प्रबन्धनञ्च ४. उपस्थितिः $75\% = 0.1 \text{ अड्कः}$ $76\%-80\% = 0.2 \text{ अड्कौ}$ $81\%-85\% = 0.3 \text{ अड्काः}$ $86\%-90\% = 0.4 \text{ अड्काः}$ ९१% तः अधिकम् = ०५ अड्काः।	अड्काः ०५ अड्काः ०५ अड्काः ०५ अड्काः ०५ २०	-	-

**सहायक पुस्तकानि -**

- |  |   |
|--|---|
| <ol style="list-style-type: none"> <li>1. बृहत्संहिता</li> <li>2. बृहत्संहिता</li> <li>3. बृहत्संहिता</li> <li>4. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (ज्योतिष खण्ड)</li> <li>5. बृहत्संहिता</li> </ol> | <ul style="list-style-type: none"> <li>- अच्युतानन्द ज्ञा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी</li> <li>- भट्टोत्पली टीका, अच्युतानन्द ज्ञा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी</li> <li>- नवदेश्वर तिवारी, भारतीय विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली</li> <li>- बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ</li> <li>- डॉ. संगीता सिंह विद्यालङ्कार, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली</li> </ul> |
|--|---|